अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2020) दिनांक : दिनांक : 21-12-2020

समय सीमा : 3 घंटा षष्ठम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

पच्चीस बोल, तत्त्वचर्चा, पच्चीस बोल की चर्चा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी–20

प्र. 1 पच्चीस बोल–किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) पांच कोटि त्याग का भांगा लिखें।
(ख) सतरहवां पाप कौन सा है?
(ग) आहार पर्याप्ति की पूर्णता में कितना समय लगता है?
(घ) मनःपर्यव ज्ञान की प्राप्ति किस गुणस्थान में होती है?
(ङ) सामान्य बोध किसे कहते हैं?
(च) स्निग्ध स्पर्श की बहुलता से कौन सा स्पर्श बनता है?
(छ) पांचवें तथा सातवें गुणस्थान का नाम लिखें।

प्र. 2 तत्व चर्चा–किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) अजीव, पुण्य, पाप, बंध, आज्ञा में या आज्ञा के बाहर?
(ख) असंज्ञीपन किस कर्म का उदय है?
(ग) आराधक किसे कहते हैं?
(घ) एकेन्द्रिय सूक्ष्म या बादर?
(ङ) अधर्म और धर्मास्ति एक या दो?
(च) पुण्य और धर्म एक या दो?
(छ) काल छह में कौन? नौ में कौन?

प्र. 3 पच्चीस बोल की चर्चा–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें। किसमें व कौन से?– 6

(क) जीव के 6 भेद।
(ख) दस उपयोग।
(ग) अठारह दण्डक।
(घ) पांच शरीर समुच्चय जीव के अलावा किसमें?
(ङ) जीव के चौदह भेद समुच्चय जीव के अलावा किसमें?

प्र. 4 चतुर्भंगी–किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 4

(क) योग जीव या अजीव?
(ख) किस गुणस्थान के जीव कम, किस गुणस्थान के जीव अधिक?
(ग) किस भेद के जीव कम, किस भेद के जीव अधिक?
(घ) लेश्या किस कर्म का उदय?
(ङ) किस आत्मा के जीव कम, किस आत्मा के जीव अधिक?
(च) तुम्हारे में चारित्र कौन सा?

प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) कर्म प्रकृति–20

प्र. 5 (जैन तत्व प्रवेश) किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) सावद्य निरवद्य द्वार।

(ख) द्रव्य-गुण-पर्याय द्वार–सामान्य गुणों को विवेचित करें।

(ग) दृष्टांत द्वार–आश्रव को विवेचित करें।

(घ) विस्तार द्वार को प्रारंभ से लेकर तीन वर्गों तक लिखें।

प्र. 6 प्रतिक्रमण–निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें– 5

(क) ईर्यापथिक सूत्र ***अथवा*** वंदना सूत्र।

प्र. 7 कर्म प्रकृति–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) दर्शन मोह की प्रकृतियों का कार्य एवं स्थिति।

(ख) दर्शनावरणीय कर्म भोगने के हेतु।

(ग) उद्‌वर्तना, अपवर्तना निधति व निकाचना की व्याख्या करें।

(घ) कर्म किसे कहते हैं? अशुभ नाम कर्म के उदय से जीव क्या प्राप्त करता है तथा इसके अनुभाव के नाम लिखें।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड)–20

प्र. 8 बावन बोल–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) उदय के तैतीस बोलों में कौन-कौन आत्मा?

(ख) आठ आत्मा कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ग) अठारह पापस्थान का उदय, उपशम, क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्व में कौन?

(घ) आठ कर्मों का बंध उदय सत्ता किस-किस गुणस्थान तक? (आयुष्य कर्म तक ही लिखें)

(ङ) चौदह गुणस्थान कितने भाव? कितनी आत्मा? (ग्यारहवां गुणस्थान तक लिखें)

प्र. 9 इक्कीस द्वार–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें–कितने व कौन-कौन से– 6

(क) अनाहारक–उपयोग, गुणस्थान, योग जीव के भेद।

(ख) सूक्ष्म–योग, गुणस्थान, जीव के भेद, भाव

(ग) अचरम–उपयोग, पक्ष, भाव, चारित्र।

(घ) अपर्याप्त–योग, दृष्टि, भाव उपयोग।

(ङ) अज्ञानी–योग, पक्ष, दृष्टि, लेश्या।

प्र. 10 जैन तत्व प्रवेश–निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) दान-दया-अनुकम्पा द्वार को प्रारंभ से लिखते हुए व्यावहारिक दान के पहले तक लिखें। ***अथवा*** सम्यक् दर्शन द्वार–प्रारंभ से लिखते हुए सम्यक्त्व के दूषण तक लिखें।

(ख) व्रताव्रत द्वार–अनगार धर्म पालने.....से प्रारंभ कर.....जारे गठको रे तक लिखें। ***अथवा*** उपासक द्वार–तीसरी, चौथी व ग्यारहवीं प्रतिमा लिखें।

लघु दण्डक व पांच ज्ञान–20

प्र. 11 लघु दण्डक–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) गति आगति द्वार–तेजसकाय से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(ख) च्यवन द्वार

(ग) दृष्टि द्वार

(घ) संस्थान द्वार

(ङ) ज्योतिष देवों की स्थिति–प्रारंभ से लिखते हुए नक्षत्र देव देवियों तक लिखें।

प्र. 12 पांच ज्ञान–निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) वर्धमान व हीनमान अवधिज्ञान की व्याख्या करें। ***अथवा*** अवधिज्ञान के द्वारा देखने की शक्ति का यंत्र बनाएं।

(ख) परोक्ष ज्ञान को प्रारंभ से लिखते हुए अश्रुत निश्रित मतिज्ञान के प्रकार तक लिखें ***अथवा*** प्रतिबोधक दृष्टांत लिखें।

संजया, नियंठा–20

प्र. 13 संजया–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र का अंतर द्वार लिखते हुए बताएं कि अनेक जीवों की अपेक्षा जघन्य स्थिति की संगति किस प्रकार घटित हो सकती है?

(ख) सूक्ष्म संपराय की स्थिति द्वार लिखते हुए बतायें कि अनेक जीवों की अपेक्षा उत्कृष्ट स्थिति किस अपेक्षा से है?

(ग) सामयिक चारित्र का कर्म उदीरणा द्वार लिखें और बताएं कि उदीरणा क्या है तथा इसके पीछे की अपेक्षा की व्याख्या करें।

(घ) सूक्ष्म संपराय का अंतर द्वार लिखते हुए बताएं कि अनेक जीवों की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट अंतर के पीछे अपेक्षा किस प्रकार घटित होती है?

(ङ) संजया के आधार पर सामायिक चारित्र एवं उसके भेदों का वर्णन करें।

प्र. 14 नियंठा–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) निर्ग्रंथ के भेदों की व्याख्या अंत तक करें।

(ख) पुलाक किसे कहते हैं? उसके भेदों का वर्णन करें।

(ग) निर्ग्रंथ का ज्ञान व अध्ययन द्वार तथा क्षेत्र द्वार लिखते हुए बताएं कि उनके संहरण न होने के पीछे क्या अपेक्षा है?

(घ) पुलाक का अंतर द्वार लिखते हुए बताएं कि एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर होने की क्या अपेक्षा है?